**बेटी नं.1 में लिंग आधारित समानता के अधिकार का प्रश्न**

**डॉ हर्षिता**

**पीएचडी,पीडीएफ़**

**दिल्ली विश्वविद्यालय**

[**Harshu.jnu@gmail.com**](mailto:Harshu.jnu@gmail.com)

**9625329375**

**शोधसार-** बेटे और बेटी के बीच फर्क हम आज ही से नहीं आदिकाल से देख रहें हैं। आज भी अनपढ़ से लेकर पढ़ी लिखे समाज में भी यह फर्क देख सकते हैं। आज भी भ्रूण हत्याएँ बेटे की चाह में की जा रही हैं हालांकि सरकार ने इस पर काफी नियम-कानून बना दिये हैं। फिर लोग चोरी छिपे इसका पता लगवा ही लेते हैं। यही कारण है कि लड़के और लड़कियों की संख्या(लिंगानुपात) के बीच काफी अंतर आ गया है। लड़कियों के जन्म पर परिवार के सदस्य दुखी हो जाते हैं। कहने को तो हम गर्व से इन्दिरा गांधी और कल्पना चावला के उदाहरण देते हैं लेकिन फिर भी लड़की के होने पर दुखी हो जाते हैं। हिन्दी सिनेमा भी समय-समय पर लिंग-भेद के खिलाफ आवाज उठाता रहा है। इस शोध-पत्र में हिन्दी फिल्म ‘बेटी नं॰ 1’ को आधार बना कर समाज में मौजूद लिंगीय असमानता पर प्रकाश डालेंगे।

**बीज शब्द-** समानता, लिंग-भेद, पितृसत्ता, सामाजिक-संरचना

बेटे और बेटी के बीच फर्क भारतीय समाज में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में दिखाई देता है। इसके पीछे मुख्य कारण पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना है। इसके अनुसार पुरूष स्त्री पर अपनी हुकूमत चलाता है। उस पर अपनी सत्ता हमेशा कायम रखना चाहता है। और स्त्री की मानसिकता को बचपन से ही इस तरह विकसित किया जाता है कि वे इस पुरूष सत्ता की अधीनता स्वीकार कर चुकी होती है। इस अधीनता में वे गर्व का अनुभव करती है। ऐसे में वे इस सत्ता का ही हिस्सा बन जाती हैं और इसके फलने-फूलने में मदद करती हैं। इसी कारण स्त्री सदियों से शोषित हैं। प्रसिद्ध समाजशास्त्री सिल्विया वाल्बे के अनुसार, *“पितृसत्तात्मकता सामाजिक संरचना की ऐसी प्रक्रिया और व्यवस्था हैं, जिसमें आदमी औरत पर अपना प्रभुत्व जमाता हैं, उसका दमन करता हैं और उसका शोषण करता हैं।”[[1]](#endnote-2)* हाँ, वर्तमान में इस सत्ता के खिलाफ जागरूकता का एक अंकुर जरूर फूटा है। लेकिन इसके पेड़ बनने में कितने वर्ष या सदियाँ लग जाएंगी यह कोई नहीं जानता।

आदिकाल से देवी की पूजा भी होती आई है। देवी भी स्त्री ही है। लेकिन जब घर में बच्चा पैदा होने वाला होता है तब हम उसी देवी से पुत्र प्राप्ति की कामना करते हैं। अर्थात हम इंसान के रूप में देवी को स्वीकार नहीं करना चाहते। इस प्रकार हम दोहरे मानदंडों में जीना पसंद करते हैं। बेटे और बेटी के बीच इसी फर्क पर बनी फिल्म ‘बेटी नंबर 1’ है।

**बेटी नं 1 (2000) -**

इस फिल्म की शुरुआत होती है फिल्म के किरदार राम(अशोक सर्राफ) द्वारा देवी दुर्गा के सामने प्रार्थना करने से। वह देवी माँ से प्रार्थना करता है-

*“राम – हे, अम्बे माते आज मेरी इज्जत तेरे हाथों में है। पिछले दस सालों में मेरी बीवी तीन बार गर्भवती हुई और तीनों बार उसने लड़कियों को जन्म दिया। अब चौथी बार मेरी बीवी गर्भवती है। इसबार उसे लड़का ही देना देवी। वरना मैं बर्बाद हो जाऊंगा। अबकी बार मुझे बेटा ही देना देवी। मुझे बेटा ही देना। जय दुर्गा माँ”।[[2]](#endnote-3)* इसके बाद वह हॉस्पिटल में जाता है। उसकी माँ जो घर की मुखिया है, वह भी हॉस्पिटल पहुँचती है। हालांकि पिता है लेकिन हमेशा पत्नी से दबे रहते हैं। इसलिए घर की मुखिया माँ से वह कहता है कि –

*“राम- मैंने शोभा से साफ-साफ कह दिया है कि मम्मी अपने पोते को देखने आने वाली है*

*दुर्गा(अरूणा ईरानी)- डीलिवरी हो गई।*

*राम- नहीं, डिलिवरी अभी तक नहीं हुई। लेकिन जब भी होगी ना , लड़का ही पैदा होगा।*

*दुर्गा- डिलिवरी से पहले तुम कैसे कह सकते हो कि लड़का ही होगा।*

*पिता दशरथ (प्रेम चोपड़ा)- अरे लड़का हो या लड़की क्या फर्क पड़ता है। लेकिन जियो तो ऐसे जियो जैसे तुम्हारी मम्मी शान से जीती है। जानते हो जब तुम्हारी मम्मी पैदा हुई तो लोगों ने क्या कहा था? लड़का पैदा हुआ है”।[[3]](#endnote-4)*

पति द्वारा यह कहना कि दुर्गा के पैदा होने पर लोगों ने कहा कि लड़का पैदा हुआ है अपने आप में दोहरा अर्थ रखता है। एक तो यह कि दुर्गा घर में पुरूष मुखिया की जगह लिए हुए है। दूसरा यह कि वह घर में सभी पुरूषों पर अपनी तानाशाही चलाती है। इस फिल्म में विडम्बना यह दिखाई गई है कि दुर्गा जो घर में बेटी होने पर दुखी होती है और अपने बेटों से भी सीधे मुंह बात नहीं करती। वह खुद एक स्त्री है इसके बावजूद वह लड़की से नफरत करती है। दूसरी बात यह कि वह स्त्री है और अपने पति व बेटों पर अपने फैसले भी थोपती है। जिसप्रकार एक पुरूष जब घर का मुखिया होता है तब वह एक तानाशाह की भूमिका में होता है ठीक उसी तरह दुर्गा भी है। दुर्गा जब मुखिया की भूमिका में है तो वह भी घर में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता या समानता का अधिकार किसी को नहीं देती। इसीलिए उसके पति ने उसकी तुलना लड़के से की।

प्रिया(रंभा) दुर्गा के तीसरे बेटे भरत(गोविंदा) के साथ एक डांस प्रतियोगिता में हिस्सा लेती है। प्रतियोगिता देर रात तक चलने के कारण प्रिया को घर पहुँचने में देर हो जाती है। उसके पिता प्रिया के घर आने पर चिंता व्यक्त करते हैं।प्रिया उनके देर तक जगने का कारण पूछती है:

*“प्रिया- पिताजी आप अभी तक सोये नहीं |*

*पिता- बेटे जिस बाप की जवान बेटी इतनी रात गए घर से बाहर हो, तुम क्या समझती हो उसे नींद आ सकती है। देखो बेटे हम गरीबों के पास एक ही दौलत है, इज्जत।*

*प्रिया- पिताजी, आप मुझ पर भरोसा रखिए। मैं ऐसा कोई काम नहीं करूंगी जिससे आपका सिर शर्म से झुके।*

*पिता- जानता हूँ।*

*प्रिया- मैं एक बात कहूँ।*

*पिता- कहो।*

*प्रिया- मैं आपकी बेटी नहीं हूँ बेटा हूँ”।[[4]](#endnote-5)*

इस संवाद में एक पिता द्वारा अपनी बेटी के घर लौटने पर चिंता जाहिर करना और बेटी द्वारा यह आश्वासन देना कि मैं कोई ऐसा काम नहीं करूंगी, जिससे पिता का सिर शर्म से झुक जाए, यही दर्शाता है कि आज भी लड़कियां घर की इज्जत आबरू समझी जाती हैं। जिन पर घर की इज्जत का भार है। लड़कियों को घर से बाहर निकल कर पढ़ने व नौकरी करने की आजादी थोड़ी बहुत तो मिल गई है। लेकिन घर-परिवार व समाज के विचार उनके प्रति अभी नहीं बदले। लड़कियों को घर की इज्जत का प्रतीक बनाना आज भी कायम है। लड़कियां यह बात बड़े गर्व से अपने पिता से कहती है कि मैं आपकी बेटी नहीं, बेटा हूँ। यानि बेटा जिस प्रकार घर की ज़िम्मेदारी उठाता है, कमाता है, पिता का नाम रोशन करता है उसी प्रकार के काम बेटी करने की कोशिश करती हैं। ऐसा क्यों? क्यों वह बेटा बनने की कोशिश करती है? क्योंकि ऐसा मान चुकी है कि बेटा ही घर, परिवार, समाज, व देश का सम्मान दिला सकता है। इसलिए वह भी कहीं न कहीं अपनी बराबरी बेटों से करने की कोशिश करती हैं। बराबरी करने की बजाय उन्हें लड़की बने रह कर ही अपने आपको साबित करना चाहिए। लेकिन हमारी फिल्में वही मध्यकालीन सोच स्त्रियों के प्रति दिखाती हैं।यही कारण है कि लड़कियों को गर्व महसूस होता है जब वे उनकी तुलना लड़कों से की जाती है।

दुर्गा का बड़ा बेटा राम जब अपनी पत्नी व नवजात बेटी के साथ जब घर में लेकर आता है तब पिता दशरथ कहते हैं:

“दशरथ- अरे बहू बेटी घर लेकर आई है, चलो आरती उतारो

दुर्गा- आरती क्या, ड्योढ़ी पर तेल भी डाल देती हूँ।

दुर्गा के पिता(गुस्से में)- हाँ-हाँ क्यों नहीं साक्षात भगवान के अवतार को घर लेकर आ रही है ना।

राम- मम्मी, बेटी पैदा होते ही आप सास क्यों बन जाती हैं।

दुर्गा- इसलिए कि खानदान को बर्बाद करने के लिए तू बेटी पर बेटी पैदा किए जा रहा है।

राम- लेकिन इसमें मेरी क्या गलती है मम्मी। घर को एक चिराग देने के चक्कर में मैं ‘फैमिली प्लानिंग’ भी भूल गया। और इन चार-चार लालटेनों का बाप बन गया”।[[5]](#endnote-6)

इस बातचीत में कहीं भी ऐसा नहीं लगता कि दुर्गा इक्कीसवीं सदी में खुद को प्रगतिशील बनाने की कोशिश कर रही है। बहू के प्रति भी उसका रवैया मध्यकालीन ही है। उसे बेटे की चाह इस कदर है कि वह नवजात बेटी का मुंह भी नहीं देखना चाहती। साथ ही बहू को खुद के घर में रखने की बजाय दूसरे घर में रहने के लिए कहती है। अपनी बहू को मनहूस मानती है क्योंकि वह बेटे को जन्म नहीं देती। अगर हम वैज्ञानिक ढंग से भी सोचें तो यह अब प्रामाणिक सत्य है कि बेटा या बेटी के पैदा होने में लड़की की नहीं लड़के की भूमिका(x और Y क्रोमोजोम के कारण)होती है। लेकिन यह बात आज भी बहुत से लोगो को नहीं पता। अपनी अज्ञानता के कारण सास बहू को इसके लिए जिम्मेदार मानती हैं। बहू पर बेटे पैदा करने के लिए दबाव बनाए रखती हैं।

भरत (गोविंदा) दुर्गा का तीसरा बेटा है। उसे फोन बूथ पर काम करने वाली गरीब लड़की प्रिया(रंभा) से प्यार हो जाता है। दुर्गा पहले तो इस शादी से इंकार कर देती है लेकिन बेटे की खुशी के लिए मान जाती है। विवाह के बाद दुर्गा प्रिया के साथ बहुत बुरा सलूक करती है। वह उसे नौकरानी की तरह डांटती है और काम करवाती है। प्रिया जल्दी ही माँ बनने की खुशखबरी देती है। दुर्गा एक बार फिर पोते की आस लगाती है। दुर्गा के पिता अपने ज्योतिष ज्ञान के आधार पर बताते हैं कि इस घर में पुत्र होगा। दुर्गा का व्यवहार प्रिया के लिए बदल जाता है। वह उससे राजकुमारी की तरह व्यवहार करने लगती है। लेकिन भरत को स्केनिग में डॉक्टर से पता चलता है कि प्रिया बेटे की नहीं बल्कि बेटी की माँ बनने वाली है। इस पर भरत और प्रिया दोनों ही परेशान हो जाते हैं। उन्हें दुख इस बात का नहीं कि उनके घर में बेटी आने वाली है बल्कि इस वे दुखी होते हैं कि बेटी आने से दुर्गा उनके साथ क्या सलूक करेगी। दुर्गा को अपने वंश को चलाने के लिए पोता ही चाहिए। माँ से डर कर भरत झूठ बोल देता है कि प्रिया बेटे की माँ बनने वाली है। दुर्गा देवी खुश हो जाती है। बेटे की चाह के कारण दुर्गा के बच्चे अपनी माँ से झूठ बोलते हैं। प्रिया को हॉस्पिटल में जिस दिन बेटी होती है उसी दिन भरत के दोस्त मुलायम चंद को उसी समय बेटा होता है। उसी दिन आकस्मिक बीमारी के कारण दुर्गा को उसी हॉस्पिटल में भर्ती करवाया जाता है। दशरथ जब भरत के हाथों में बेटा देखता है तो वह सोचता है कि यह भरत का बेटा है। जबकि केवल देखने के लिए वह मुलायम का बेटा हाथ में ले लेता है। दशरथ दौड़ कर दुर्गा को वह लड़का दिखाने के लिए ले जाता है। दुर्गा अपने पोते को देख कर सारी बीमारी भूल जाती है। भरत माँ की बीमारी को ठीक होता देख कर वह यह बताने की हिम्मत नहीं कर पाता कि वह दोस्त का बेटा है और प्रिया ने बेटी को जन्म दिया है। घर में कुलदीपक की चाह इस कदर है कि माँ की बीमारी भी ठीक हो जाती है। दुर्गा की बीमारी के बिलकुल ठीक होने तक भरत और मुलायम चंद अपने बच्चों को कुछ समय के लिए एक दूसरे के पास रखने का फैसला करते हैं। एक तरफ प्रिया अपनी बेटी के लिए तड़पती है तो दूसरी तरफ मुलायम चंद की पत्नी अपने बेटे के लिए तड़पती है। भरत के दोनों भाई दुर्गा के सामने भरत की असलियत खोल देते हैं। उसी समय मुलायम चंद के कुछ दुश्मन गलती से भरत की बेटी को मुलायम चंद का बच्चा समझ कर चुरा लेते हैं। इस पर दुर्गा कहती है कि इस घर से भरत की बेटी को छुड़वाने कोई नहीं जाएगा। अगर वह मरती है तो मर जाए। इस पर प्रिया गुस्सा होती है और दुर्गा को मारने के किए लकड़ी काटने का औज़ार उठा लेती है। क्योंकि प्रिया की बेटी उसके लिए उसका संसार है। भरत प्रिया को रोक लेता है। दुर्गा भरत और अपने पति से कहती है कि यह पागल हो गई है इसे पागलखाने भेज दो। इस पर दशरथ दुर्गा को उसकी हरकतों के लिए उस पर हाथ उठाता है और कहता है-

*“दशरथ- पागल ये नहीं। पागल तुम हो गई हो। पागलखाने तुम्हें भेज देना चाहिए।*

*दुर्गा (अपने पिता से कहती है)- पिताजी, देखा आपने इन्होंने मुझ पर हाथ उठाया। मुझपे।*

*पिता- शाबाश बेटा। आज बना है तू मर्द। अब जंवाई बना है मेरा। जीते रहो।*

*दशरथ- आज तक मैं इस घर में सिर झुका कर जीता रहा ताकि इस घर की शांति बनी रहे। लेकिन तुमने तो मुझे नामर्द ही बना दिया था। आज मैं तुम्हें बता देना चाहता हूँ कि जो आदमी सिर झुका लेता है वो नामर्द नहीं हो जाता है। भरत और प्रिय ने कोई गलत काम नहीं किया। कुसूरवार तो मैं हूँ। अस्पताल में जब मैंने भरत के हाथों में उस बच्चे को देखा तो मैंने तुरंत तुम्हारी जिंदगी बचाने के लिए, तुम्हारी जिंदगी बचाने के लिए मैंने उस बच्चे को उसके हाथों से छीन लिया और ये भी नहीं पूछा कि बच्चा किसका है। तुम्हारी ज़िंदगी तो बच गई लेकिन इन बेचारों की ज़िंदगी नर्क से भी बदतर हो गई। मैं पूछता हूँ कि क्या फर्क है बेटा और बेटी में। आज कल के युग में बेटियों को बोझ नहीं माना जाता। वो मर्द के साथ कदम से कदम मिला कर चलने की ताकत रखती हैं। ऐसा कौनसा काम है जो एक बेटा कर सकता है बेटी नहीं कर सकती। दुनिया की तुम पहली औरत हो जिसे औरत जात से नफरत है। तुम औरत नहीं, औरत के नाम पर कलंक हो। अरे बेवकूफ आज मैं तुझे बताता हूँ कि बेटा और बेटी में क्या फर्क होता है।.................... बेटा तब तक बेटा है जब तक उसकी शादी नहीं हो जाती, बेटी ज़िंदगी भर बेटी रहती है”।[[6]](#endnote-7)*

इस उपदेशात्मक संवाद के बाद दुर्गा की सोच बेटियों के प्रति बिल्कुल बदल जाती है। जब भरत व उसके अन्य भाई अपने बच्चों को गुंडों से छुड़वाकर घर लाते हैं तब भरत कहता है कि मम्मी अब हम इस घर में नहीं रहेंगे। मम्मी को पोता चाहिए था वो हम उनको नहीं दे सके। और वैसे भी जहां बेटियों कदर नहीं हो वहाँ हम नहीं रहेंगे। तब दुर्गा भरत से माफी मांगती है। और कहती है बेटी तो नंबर 1 होती है।

**निष्कर्ष-** फिल्म में सुखद अंत के साथ दुर्गा की सोच को तो बदलता हुआ दिखा दिया गया। लेकिन आज भी हमारे समाज के हर घर में कोई न कोई दुर्गा उपस्थित है। फिल्म के तीन घंटे में जिस सोच को बदलता हुआ दिखा दिया गया है असल जीवन में यह सोच बदलने के लिए अगर तीन सौ साल भी लगे तो हम इसे कम ही समझेंगे। समाज में भ्रूण हत्याएँ भी लड़का और लड़की में भेद-भाव समझने के कारण ही होती हैं। लड़की के पैदा होने पर माँ-बाप को लगता है कि लड़की की शादी के लिए दहेज देना पड़ेगा। लड़के के माँ-बाप को लगता है कि लड़का कुल का दीपक है। हमारे वंश को आगे बढ़ाएगा। हमारे बुढ़ापे का सहारा होगा। लड़के की शादी में दहेज आएगा। इतना ही लड़कियों और लड़कों के बीच असमानता शिक्षा पर खर्च करने को लेकर भी होती है। माँ-बाप के पास पैसा कम है तो लड़के की पढ़ाई पर खर्च करते है और लड़की को घर बैठा देते हैं। लड़के और लड़की के बीच भेद-भाव खान-पान पर भी होते हुए देखा जाता है।

1. *(*[*http://www.hindikiduniya.com/social-issues/gender-inequality/*](http://www.hindikiduniya.com/social-issues/gender-inequality/)*, 5-3-2017)* [↑](#endnote-ref-2)
2. *फिल्म- बेटी नंबर 1(2000)* [↑](#endnote-ref-3)
3. *फिल्म- बेटी नंबर 1(2000)* [↑](#endnote-ref-4)
4. *फिल्म- बेटी नंबर 1(2000)* [↑](#endnote-ref-5)
5. *वही* [↑](#endnote-ref-6)
6. *फिल्म- बेटी नंबर 1(2000)* [↑](#endnote-ref-7)